‘जय हनुमान’ कविता

प्रगति पराक्रम और पौरुष के प्रचण्ड रूप
विद्या के कला के मूर्त्त
मूर्तिमान ब्रह्मचर्य
धर्मशील, न्यायशील, शौर्यशील, दौत्य-कर्म- मर्मशील
संस्कृत के
संस्कृति के
दीर्घकृति के
दीप्तिमान देवता
वायुपुत्र को प्रणाम
रामदूत को प्रणाम।
आञ्जनेय को प्रणाम|
जिसके स्मरण मात्र से विपन्न मानव को
मिलती महान शक्ति, ज्ञान, भक्ति, जग-विरक्ति
काल को निगलने का
विघ्न को कुचलने का
शत्रु- व्यूह दलने का
अप्रमेय साहस, उत्साह ओज, धीरता
उस अजेय जेता के
कपि-कुल- नेता के
वन्दनीय
वज्र-सम चरणों में
शत बार वन्दन
सहस्र बार वन्दन
असंख्य बार वन्दन।
जिसने गरजते अलंघ्य जीव-जन्तु मय
भीषण तरंगों के समन्वित
अगाध-जल
हिन्द महासागर के गौरव को नष्ट किया वारिधि को पार कर
और उस पार जा
देववन्द्य राम की पदारविन्द योगिनी
पीड़िता वियोगिनी
आवृता निशाचरों से
श्वानों के बीच हरिणी सी भय विह्वला
सीता के अर्चनीय चरणों के दर्शन से
पावन हो
सावन हो
दर-दर अश्रु के निपात से
असहनीय दुःख जन्य क्रोध से प्रमत्त हो

विराट, भीमकाय हो
मूर्तिमान पावक प्रचण्डता-निकाय हो नागिन सी पुच्छ के प्रचण्ड वह्नि जाल से
घूम-घूम
फूँक दिया लंका को
झूम-झूम
घास फूस की तरह
डङ्का की चोट पर गा-गा के रामकीर्ति
जल गया रावण का
स्वत्व ज्ञान
आन-बान
स्वाभिमान
खो-खोर बह गयी लंका की रत्न- राशि उस अदम्य तेज मूर्त्ति
बल-स्फूर्ति के निधान
जगद्वन्द्य
हनूमान के बलिष्ठ चरणों में
नमस्कार
चरणों के रजकरण में
नमस्कार
नमस्कार।

केले के निकुंज में

मदान्ध गज के समान
गर्वशील दनुजों की शौर्य-शक्ति रौंद कर
खोयी हुयी सीता का बताया पता राघव को
परम प्रसन्न हो, कृतज्ञ हो, ऋणी हो जिसे
दौड़ के लगाया कण्ठ
आँखें भर राम ने
गूँजा प्रवर्षण गिरि
बार-बार घोष से
जय हनुमान, जय जय हनुमान के
वह रामभक्त हनुमान
छन्द - छन्द के
अर्घ्यपाद्य फूल लें
सहर्ष आशीर्वाद दें।
वीर हनुमान से
अनेक बार याचना
बार-बार प्रार्थना कि
मानव समाज की अनीतियों को दूर कर
सफल बनाये
जन-जीवन जगाये देश - जाति को उठाये
नित
'जय हनुमान' यह।